33

ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - VIII Issue - I Hindi January - March - 2019

Peer Reviewed Referred and UGC Listed Journal

Journal No. 40776

IMPACT FACTOR / INDEXING
2018 - 5.5
www.sjifactor.com

✣ EDITOR ✣
Asst. Prof. Vinay Shankarrao Hatole
M.Sc (Maths), M.B.A. (Mktg.), M.B.A. (H.R.),
M Drama (Acting), M Drama (Prod. & Dir.), M Ed

True Copy
Vice Principal
Kisanveer Mahavidyalaya
Wai, Dist. Satara - 412 803

✣ PUBLISHED BY ✣
Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

Scanned with OKEN Scanner

VOLUME - VIII ISSUE - I - JANUARY - MARCH - 2019
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 5.5 (www.sjifactor.com)

35

CONTENTS OF HINDI

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१	नब्बे के दशक की हिंदी कविता प्रा. रशीद नसरुद्दीन तहसिलदार	१-४
२	हिंदी दलित कविता में आंबेडकरवादी संस्कृति का जयघोष प्रा. डॉ. गोरख निळोबा वनसोडे	५-९
३	बहुसंस्कृतियों बेबाक तस्वीर : पीली छतरीवाली लड़की प्रा. डॉ. अजय कुमार कृष्णा कांबळे	१०-१४
४	पंजाब के संपन्न किसान परिवारों की आर्थिक बदहाली की दास्तां : मिले सुर मेरा तुम्हारा डॉ. एकनाथ श्री पाटील	१५-२१
५	हिंदी साहित्य में बहुसंस्कृतिवाद प्रा. डॉ. हणमंत महादेव सोहनी	२२-२५
६	प्रेमचंद की कहानियों में चित्रित बहुसंस्कृतिवाद प्रा. डॉ. सौ. सविता लालासो नाईक निबांळकर	२६-२८
७	चंद्रिका जैन के उपन्यासों में महानगरीय बहुसंस्कृतिवाद डॉ. भास्कर उमराव भवर	२९-३४
८	बीसवीं सदी में अंतिम दशक के हिंदी उपन्यास और बहुसंस्कृतीवाद डॉ. सरिता बाबासाहेब विढकर	३५-३७
९	हिंदी साहित्य पर संस्कृतिवाद का प्रभाव प्रा. एम. आर. बेनके	३८-४०
१०	राष्ट्रवाद बनाम साम्प्रदायिकता डॉ. संतोष रायबोले	४१-४५
११	अंतिम दशक के हिंदी साहित्य में सांस्कृतिक चेतना प्रा. आर. बी. भुवेकर	४६-४९
१२	भूमंडलीकरण के परिप्रेक्ष्य में इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविता डॉ. प्रकाश कांबळे	५०-५७

True Copy
Vice Principal
Kisanveer Mahavidyalaya
Wai, Dist. Satara - 412 803

Scanned with CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

VOLUME - VIII, ISSUE - I - JANUARY - MARCH - 2019
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 5.5 (www.sjifactor.com)

CONTENTS OF HINDI

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१३	बहुसंस्कृतिवाद सागरकुमार विठ्ठल पाचव	५८-६२
१४	हिंदी साहित्य में चित्रित बहुसांस्कृतिकता प्रा. संदीप पांडुरंग शिंदे	६३-६७
१५	बहुसांस्कृतिकता और नारी डॉ. संजय बजरंग देसाई	६८-७२
१६	गली आगे मुडती है उपन्यास में बहुसंस्कृतिवाद प्रा. सुधाकर कल्लाप्पा इंडी	७३-७७
१७	वैश्वीकरण और हिंदी कविता सौ. अश्विनी विश्वजीत पाटील	७८-८०
१८	बहुसंस्कृतिवाद का प्रभाव और राजेंद्र यादव की कहानी 'प्रतिक्षा' सौ. विद्या शामराव चौगले	८१-८३
१९	डिजिटल इंडिया : ग्रामीण शिक्षा के संदर्भ में एक अध्ययन अर्पित सुमन टोप्पो	८४-८७
२०	कौशल्य विकास : एक कदम कुशलता की ओर श्रीमती प्रियंका भारती डॉ. गगन कुमार	८८-९२
२१	बहुसंस्कृतिवाद का हिंदी नाटकोंपर प्रभाव बौद्ध संस्कृति का हिंदी नाटकोंपर प्रभाव (जयशंकर प्रसाद जी के नाटकों के संदर्भ में) प्रा. डॉ. भानुदास आगेडकर	९३-९६
२२	बीसवीं सदी के अंतिम दशक की हिंदी कविता : एक अध्ययन प्रा. जयसिंग मारुती कांबळे	९७-१०३

Scanned with CamScanner
Scanned with OKEN Scanner

36

VOLUME - VIII, ISSUE - 1 - JANUARY - MARCH - 2019
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 5.5 (www.sjifactor.com)

२१. बहुसंस्कृतिवाद का हिंदी साहित्यपर प्रभाव
बौध्द संस्कृति का हिंदी नाटकोंपर प्रभाव
(जयांकर प्रसाद जी के नाटकों के संदर्भ में)

प्रा. डॉ. भानुदास आगेडकर
अध्यक्ष हिंदी विभाग, किसन वीर महाविद्यालय, वाई.

पृष्ठभूमि

मानव और संस्कृति की अवधारणा दोनों परस्पर सापेक्ष है। संस्कृति मानवीय क्रिया-कलाप का उत्पाद भी है और उसकी उपलब्धियों का अभिज्ञान भी। वह मानव विकास की प्रक्रिया में प्रकट एक विशेष प्रकार का क्रिया-कलाप है। जो उसके सर्वांगीण मान्यताओं के प्रति उसकी जागरूकता को संकेतित करता है। इस दृष्टि से देखें तो 'संस्कृति' विषय बड़ा जटिल है। किंतु आज-कल सांस्कृतिक कार्यक्रम जैसे शब्दों द्वारा इसका प्रयोग यत्र-तत्र किया जाने लगा है। जिससे ऐसा लग रहा है कि लोग आज केवल नाच-गाने को ही 'संस्कृति' मानने लगे है। किंतु विद्वजनों के दृष्टि से देखे तो संस्कृति की अवधारणा अत्यंत व्यापक है। स्वयं 'संस्कृति' शब्द इसका प्रमाण है। प्रारंभिक काल में इसके इसके लिए प्रयोगित [illegible] शब्द मिलता है- 'कृष्टि'। जिसकी व्युत्पत्ति संस्कृत भाषा में रहे 'कृष' धातु से हुई मानते है। इसका अर्थ खेती करना, संवर्धन करना, पैदा आदि होता है। इसका सांकेतिक अथवा लाक्षणिक अर्थ होगा- जीवन की मिट्टी को जोतना और बोना। इसी के समकक्ष 'कल्चर' शब्द इन्हीं अर्थों से गुजरा है।[1] इसका व्यापक अर्थ को स्पष्ट करते हुए अनेक आचार्यों ने संस्कृति को परिभाषित करने का प्रयास किया है। उनमें से गोविंद [illegible] जी के अनुसार 'संस्कृति एक प्रकार से खेती है। यह खेती है भावो और विचारों की आचार और व्यवहारों की मूल्यों और जीवन दर्शन की।'[2] पाश्चात्य विचारकों ने इसे मानवशास्त्रीय एवं समाजशास्त्रीयता की दृष्टि से परिभाषित किया है। उनमें से मानवशास्त्री टायलरने एक स्थान पर लिखा है कि 'संस्कृति वह जटिल सामग्री है जिसमें ज्ञान, विश्वास, कला, आचार, कानून, प्रथा तथा ऐसी ही अन्य क्षमताओं एवं आदतों का समावेश होता है जिन्हे मानव समाज के सदस्य होने के नाते प्राप्त करता है।'[3] तो प्रसिद्ध समाजशास्त्री मेकाइवर और पेज के अनुसार 'संस्कृति सभ्यता का प्रतिवाद है। हमारे रहने तथा सोचने के तरीका में, रोज की अंतःक्रियाओं में, कला में, [illegible] धर्म में, मनोरंजन तथा आमोद-प्रमोद में संस्कृति हमारी प्रकृति की अभिव्यक्ति है।'[4] इन परिभाषाओं के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि संस्कृति में विश्वास, विचार, प्रथाएँ, परम्पराएँ, [illegible] आदर्श, मूल्य, कला-निपुणता आदि समाविष्ट है। साथ ही ज्ञान, वास्तु, चित्रकला, आदर्श जीवन [illegible] विचार खान-पान [illegible] आदि का सम्मिश्रण रूप संस्कृति है। सरल शब्दों में कहा जाए तो मनुष्य [illegible] प्रकृति पर निर्भर रहा है किंतु उसने उसी प्राकृतिक [illegible] और [illegible] आदि [illegible] जीवन शैली का निर्माण किया। इसी प्रकार [illegible] श्रम और [illegible] से [illegible] सहित [illegible] की स्थापना करके उसको

True Copy
Vice Principal
Kisanveer Mahavidyalaya
Wai, Dist. Satara - 412 8..

पीढ़ी दर पीढ़ी समान छोड़ती है। अर्थात एक पीढ़ी जाती है तब अपने आचार-विचार, कृति, आध्यात्मिकता-सहित, भोजन-भजन, पोशाखा-ओढ़ावा, तीज-त्योहार, उत्सव, आध्यात्मिकता आदि सभी धरणाएँ अगली पीढ़ी के लिए छोड़ जाते है। एक पीढ़ी के बाद दूसरी, दूसरी के बाद तीसरी और इसी तरह आगे बहुतसी पीढ़ियाँ आती-जाती रहती है और सभी अपना प्रभाव अपने से अगली पीढ़ी पर छोड़ती जाती है। यही प्रभाव जिसे आज-कल संस्कार या सभ्यता भी कहते है – संस्कृति है। इसी वैचारिक भूमि पर बहुसंस्कृतिवाद की चर्चा की जाती है।

बौद्ध संस्कृति : सामान्य परिचय

मानव और संस्कृति की अवधारणा दोनों परस्पर सम्बद्ध है। संस्कृति मूलतः मानवीय क्रिया-कलापों का अध्ययन है। जो विकास की प्रक्रिया में मानवीय समस्याओं, प्रकृति और परिवेश के साथ उसके सम्बन्धों, समाज और मूल्यों के प्रति उसकी जागरूकता को संचालित करती है। इस दृष्टी से देखें तो जहाँ भी मानव मात्र का निवास है, वहां संस्कृति विद्यमान रहती है। क्योंकि यह मानव अस्तित्व के लिए आवश्यक शर्त है। आदिम मानव से आज के आधुनिक मानव तक जैसे मानव का विकास हुआ है, उसी तरह संस्कृति भी तब से लेकर आज तक निरंतर प्रवाहित तथा विकसित होती गई है। उसके इस विकास की अवस्था में मानव के जीने का अर्थ निरन्तरता से एक ही रहा है – सामाजिक सरोकार के बीच जीना। संस्कृति की इसी अवधारणा के अंतर्गत उसके अनेक अलग-अलग भाग [illegible] से दिखाई देते है। आज हर एक राष्ट्र की, हर एक धर्म की, हर एक सामाजिक घटक की, परिवेश की हर एक जाति और उपजातियों की, कुल, गोत्र की स्वतंत्र संस्कृति या सभ्यता प्रचलित रही दिखाई देती है। हमारे ही देश में उपजकर विकसीत हुई बौद्ध संस्कृति इन्ही बहुसंस्कृति में से एक है। इस संस्कृति ने हमारे देश में प्रचलित भारतीय संस्कृति के साथ-साथ पिछले अढाई हजार वर्षों से आज तक अपनी स्वतंत्र पहचान बनाकर कायम रखी है। अन्य संस्कृतियों के समान बौद्ध संस्कृति की अपनी सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, आचार-विचार, तीज-त्योहार, आध्यात्मिक सोच, वैज्ञानिक दृष्टि, रहन-सहन, पेहनावा-ओढ़ावा, व्यापार-वाणिज्य, कला, ज्ञान, विश्वास, नीतिमूल्य, खान-पान, आदर्श जीवन-शैली आदि सभी स्वतंत्र मान्यताएँ स्थापित की है। पिछले अढाई वर्षो से पीढ़ी दर पीढ़ी उनके इन्ही मान्यताओं का सकल समूह द्वारा आदान-प्रदान करते हुए प्रवाह की भांति निरंतर प्रवाहित रही है। पंडित राहुल सांकृत्यायन जी के अनुसार "बौद्ध संस्कृति भारत की विश्व संस्कृति को सम्मिलन है उसका एक दीर्घ-काल-व्यापी जीवन है, दीर्घ-काल ही नहीं दीर्घ-देश-व्यापी भी कहना चाहिए।"[5] [illegible] के अनुसार इस संस्कृति की स्थापना आज से लगभग अढाई हजार वर्षों पहले इस देश में प्रचलित रही [illegible] संस्कृति, द्राविड़ संस्कृति जैसी भिन्न-भिन्न संस्कृतियों के बीच पैदा हुए सिद्धार्थ गौतम ने बुद्धत्व प्राप्त करके अपने शिष्यों को "बहुजन हिताय-बहुजन सुखाय" के लिए संसार में चारिका करने का आदेश दिया, से माना जाता है। [illegible] संस्कृति प्रचार एवं प्रसार की दृष्टि से दुनिया की सबसे अधिक [illegible] संस्कृति रही है। अन्य संस्कृतियों की तुलना में इस संस्कृति ने [illegible] की [illegible] या पूर्णता का दावा कहीं किया, बल्कि अन्य संस्कृतियों के साथ मिलजुलकर अपना अस्तित्व तथा महत्व कायम किया हुआ दिखाई देता है। यही कारण है कि पिछले कई वर्षों से [illegible] स्वागत किए बिना [illegible] प्राचीन [illegible] विश्व में [illegible] अनेक छोटे-बड़े देशोंने उसका सम्मान और स्वागत किया हुआ नजर आता है। बौद्ध संस्कृति की [illegible] तथा [illegible] की पहचान कराते हुए पंडित राहुल सांकृत्यायन [illegible] एक स्थान पर लिखा है कि, "बौद्ध संस्कृति इस देश ने [illegible] भारत [illegible] और [illegible] एक ही आदर्श – [illegible] का [illegible] पालन किया। इसीलिए बौद्ध [illegible] और [illegible] [illegible] की तरह [illegible] नाम पर [illegible] की जाति [illegible]

[5] [illegible]

Scanned with CamScanner
Scanned with OKEN Scanner

नाट्यकृतियाँ लिखी हुई दिखाई देती है। मानो प्रसाद जी अपने नाटकों के माध्यम से बौद्ध संस्कृति का ही वहन कर रहे है। उनके द्वारा प्रस्तुत 'कल्याणी' 'सज्जन', 'प्रायश्चित', 'करुणालय', 'राज्यश्री', 'विशाखा', 'अजातशत्रु', 'जनमेजय का नागयज्ञ', 'कामना', 'स्कन्दगुप्त', 'चंद्रगुप्त' आदि सभी नाट्यकृतियों में पंच शील का पालन, अहिंसा का पालन, दु:ख मुक्ति का मध्यम मार्ग, नीतितत्वों का पालन सहित बौद्ध संस्कृति के मानवहितकारी सभी आदर्श मूल्यों का आचार भूमि के रूप में प्रयोग हुआ दिखाई देता है। इसके अतिरिक्त नाट्यकृतियों में चित्रित चरित्रों के नाम, उनकी वेशभूषा, उनका पहनावा-ओढ़ावा, उनके कार्यकलाप, शहरों-नगरों के नाम, उनमें वर्णित उत्सव, उनमें वर्णित चित्रकला, वास्तुकला, शिल्पकला केवल बौद्ध संस्कृति की पहचान ही नहीं कराते तो यह साथ प्रतीत और सिद्ध बौद्ध संस्कृति का इन नाटकों पर कितना गहरा प्रभाव पड़ा है इस बात का मानो प्रमाण ही देते है। यह प्रभाव मूलतः जयशंकर प्रसाद जी के व्यक्तित्व पर ही था। शायद इसीलिए 'श्रीमती महादेवी वर्मा ने पहली बार देखा तो उन्हें बौद्ध भिक्षु ही कहा था।'[8] इस तरह प्रसाद जी का बौद्ध संस्कृति के साथ काफी गहरे सम्बंध होने का अनुमान लगाया जा सकता है। इसी अनुमान को प्रमाणित करते हुए अवधेश चंद्रगुप्त जी ने एक स्थान पर लिखा है कि जयशंकर प्रसाद जी ने बौद्ध दर्शन का अध्ययन किया था। परिणामतः बौद्ध दर्शन की करुणा, शांति, और अहिंसा की विचारधारा से प्रभावित होकर उन्होंने उसकी प्रतिस्थापना अपने नाट्यकृतियों में की है।[9] उनके समान डॉ. देवदत्त शर्मा जी ने भी लिखा है कि 'मनुष्य में भोग की लिप्सा अशांत बनाती है। यह भोग लिप्सा ही नाना दु:खों को जन्म देती है। फलतः मनुष्य स्वयं तो दु:खी है ही दूसरों को भी दुःख से दग्ध कर देता है। महाकवि जयशंकर प्रसाद भी बुद्ध दर्शन की इस विचारधारा से मुक्त नहीं है।'[10] इससे यह भली-भाँति स्पष्ट होता है कि स्वयं जयशंकर प्रसाद जी पर बौद्ध संस्कृति का प्रभाव था। जिस संस्कृति का मूल उद्देश विश्वमानवता, विश्व शांति तथा सब के प्रति करुणा और मैत्रिभाव रखते हुए समस्त मानव जाति का दैनंदिन जीवन दुःख मुक्त बनाकर समृद्ध करना है। जयशंकर प्रसाद जी के सभी नाटक बौद्ध संस्कृति के इसी आचार-विचारों तथा आदर्श सांस्कृतिक मूल्यों का प्रचार-प्रसार करते हुए दिखाई देते है। इसमें किसी भी तरह की दो राय नहीं। है।

संदर्भ सूची

१. गोविन्द चातक संस्कृति समस्या और संभावना पृ. 9
२. गोविन्द चातक संस्कृति समस्या और संभावना पृ. 10
३. उद्. गोविन्द चातक संस्कृति समस्या और संभावना पृ. 220
४. उद्. गोविन्द चातक संस्कृति समस्या और संभावना पृ. 220
५. प. राहुल सांकृत्यायन – बौद्ध संस्कृति पृ. 3–4
६. प. राहुल सांकृत्यायन – बौद्ध संस्कृति पृ. 3–4
७. प्रोफेसर प्रेमशंकर – प्रसाद का काव्य पृ. [illegible]
८. श्री गणेश खरे – युगकवि प्रसाद पृ. 17
९. अवधेश चंद्रगुप्त – स्वातंत्र्योत्तर नाटक में विचार तत्व पृ. 24
१०. डॉ. देवदत्त शर्मा – आधुनिक हिंदी महाकाव्यों में दार्शनिक चिंतन पृ. 137

Scanned with CamScanner
Scanned with OKEN Scanner